IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 10, Issue 1, October 2021
Impact Factor: 5.731

मौलाना आजाद : धर्म की अवधारणा

डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय
सहायक आचार्य
वीरभूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महोबा उ0 प्र0
truthonly88@gmail.com

१८८८ ई. में मक्का में जन्मे मौलाना अबुल कलाम आज़ाद किसी देश, काल और धर्म की रूढियों में आबद्ध नजर नहीं आते। उनके विचारों का उपयोग समय और स्थान के मुताबिक कहीं भी किया जा सकता है। फिर भी, चूँकि मौलाना आज़ाद का एक निश्चित कार्यक्षेत्र था, एक समय और स्थान विशेष में उनके विचारों का उद्भव और प्रसार हुआ, इसलिये मौलाना आज़ाद के विचारों को समझते समय, उनकी उपलब्धियों की व्याख्या करते समय, देशगत और परिस्थितिगत वैशिष्ट्य को ध्यान में रखना जरूरी है। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ऐसे आकाशधर्मा युगपुरुष थे, जिन्होंने समूची मानवता के हित में काम किया, समूचे मानव समुदाय को सही दिशा देने का स्तुत्य प्रयास किया। गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी भारतीय जनता के दुःख-दर्द की बात करने वाले मौलाना आज़ाद मानव समाज में बेहतरी लाने का निरंतर प्रयास करते रहे। धर्म की तर्कसंगत युगानुकूल व्याख्या करते हुये मौलाना आजाद ने सर्व-धर्म समभाव की कोशिश को पुख्ता बनाया, धार्मिक विद्वेष फैलाने वाली ताकतों के खिलाफ पुरजोर मुहिम चलाई और शिक्षा तथा ज्ञानार्जन के नये क्षितिज का उद्घाटन कर मानव मुक्ति के द्वार खोले।

भारत में धर्म को मनुष्य का लक्षण माना गया है-

'आहारनिद्राभयमैथुनंचमामान्यमेतत् पशुभिः नराणाम्।
धर्मो हि तेषामषिको विशेषो धर्मेण-हीनाः पशुभिः समानाः ।।[१]

अर्थात् आहार, निद्रा, भय और मैथुन मनुष्यों में पशुओं के समान ही होता है धर्म ही उनमें (मनुष्यों में) विशेष होता है। धर्म से हीन मनुष्य पशुओं के समान है। सिग्मण्ड फ्रायडू और थियोडोत्रोडर धर्म को चाहे कितना ही

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

कोस लें, चाहे उसे 'यौन-भावना की विकृत अभिव्यंजना' कहें या 'मानवता की सार्वभौम सम्मोहक मनोवृत्ति' उसकी महत्ता कम नहीं हो सकती।

वस्तुतः धर्म मानव जीवन को जीवन्त बनाये रखने के लिये संजीवनी बूटी है जिसे किसी भी रूप में मनस्ताप नहीं कहा जा सकता। धर्म के प्रभाव से डाकू संत बनते देखा गया है और कामुक 'वीत रागी'। ज्यूरिक स्कूल के मनोविश्लेषकों ने तर्क दिया है कि धर्म रोग न होकर रोग के उपचार की विधि है। धार्मिक आस्था से जीवन में ज्योति, भयंकर झंझावत में भी जलती रहती है। मीरा की तरह किसी राजकीय सत्ता से व्यक्ति आतंकित नहीं होता, सीता की तरह अत्याचार से कभी हार नहीं मानता और गाँधी, नेहरू, मौलाना आज़ाद की तरह अस्त्र-शस्त्र की टंकार से हिम्मत नहीं हारता।

मानव समाज को मौलाना निरन्तर विकसित होने वाली इकाई के रूप में देखते थे। परिवर्तन की अनिवार्यता को नकारने का हठधर्मी रुख आज़ाद ने नहीं अपनाया था, इसलिये धर्म के बारे में उनका नजरिया यथास्थितिवादी धर्म-चिन्तकों के नजरिये से अलग है। मौलाना आजाद का धर्म के प्रति लगाव बहुत बचपन से ही था। 'तास्सुब की मिजते' (भेद-भाव की कहानियाँ) और 'अवायद और रसूम' (प्रथाएँ और रीति-रिवाज) नामक निबन्ध इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। १९०३ में, पन्द्रह वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते मौलाना आजाद अपने पैतृक विश्वासों पर स्थिर न रह सके थे। उनकी चिन्ता में परिवर्तन आने लगा था और वह नए सिरे से अपना रास्ता बनाने और उसे तय करने की ओर प्रवृत्त हो गये थे। परिवर्तन कामी मौलाना आजाद ने लिखा है-

आम हालात में मज़हब इंसान को उसके खानदानी बिरसे के साथ मिलता है और मुझे भी मिला लेकिन मैं पैतृक विश्वासों पर टिक न सका। मेरी प्यास इससे ज्यादा निकली जितनी तृप्ति वे मुझे दे सकते थे। मुझे पुरानी राहों से निकलकर खुद अपनी राहें ढूँढनी पड़ीं। जिन्दगी के अभी पन्द्रह बरस भी पूरे नहीं हुये थे कि दिमाग नयी राहों की खोज में व्यस्त हो गया था और पैतृक विश्वास जिस रूप में सामने आकर खड़े हो जाते थे, उन्हें अस्वीकार करने लगा था।[२]

महान व्यक्तित्व बन्धनों में नहीं रह सकता। अगर मौलाना आज़ाद चाहते तो अपने पिता की इच्छानुसार उनके द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चल निकलते, पीरी-मुरीदी स्वीकार कर लेते। दीक्षा और धार्मिक उपदेशों के लिये अपने आपको समर्पित कर देते और धार्मिक नेता के रूप में श्रद्धालुओं की भीड़ में घिरे रहते। लेकिन उन्होंने ऐसा

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

नहीं किया, बल्कि प्रकृति से जो क्षमतायें उन्हें प्राप्त हुई थी और जिस भावना और साहस की धरोहर उसके पास थी, उसे वे क्रियान्वित करने की दिशा में आगे बढ़े। मौलाना आज़ाद की आज़ादी का कारण भी यही मनः स्थिति थी। 'इण्डिया विंस फ्रीडम' में मौलाना ने 'आजाद' उपनाम रखने का कारण यह बतलाया है - 'दो तीन साल तक मेरे दिल में गहरी बेचैनी रही और मैं सन्देहों को दूर करने की कोशिश में तड़पता रहा। तरह-तरह के विचार मन में आते रहे। अन्ततः मैं एक मंजिल पर पहुँचा। जब वे बन्दिशें टूट कर चूर-चूर हो गयीं जो मेरे खानदान और खानदानी वातावरण की शिक्षा ने मेरे ज़ेहन पर लगाई थी। मुझे लगा कि मैं तमाम पारम्परिक और दैवीय बन्धनों से आज़ाद हो गया हूँ और मैंने फैसला किया कि आगे कदम बढ़ाऊँगा तो उसी राह पर जो मैंने अपने लिये चुनी हो। यही वह जमाना था जब मैंने 'आजाद' का उर्फ इख्तियार किया।[३]

मौलाना आज़ाद का समस्त लेखन सिवाय 'इण्डिया विंस फ्रीडम' और दो पत्र-संग्रहों के गहरे धार्मिक रंग में रंगा है। 'कुरान' की आयतें उनके जीवन में रची बसी थी। आज़ाद 'कुरान' को अपनी आस्था का वास्तविक आधार स्वीकार करते थे और अपने चिन्तन का प्रेरणा स्रोत मानते थे। उन्होंने 'कुरान' की परम्परागत व्याख्या को स्वीकार न करते हुये उसे अपनी तरह से परिभाषित किया और इसके समर्थन में 'कुरान' की आयतों से उद्धरण (प्रमाण) उठाये। यही कारण था कि मौलाना आजाद ने औरों से अलग स्वतंत्रता पूर्वक चिन्तन किया और आत्म विश्वास के साथ लोगों का मार्गदर्शन करने में सफल हुये। 'जेहाद' पर विचार करते हुये उन्होंने लिखा है - "इस्लाम वस्तुतः दुनिया में इसलिये आया कि शुभ का प्रसार हो और अशुभ पर अंकुश लगे। दरअसल शुभ और जेहाद एक ही आदेश के दो पहलू हैं। इसलिये सत्य की दिशा में किया गया ईमानदारी भरा प्रत्येक प्रयास, सत्य व शुभ के लिये किया गया जतन, न्याय को सुनिश्चित करने का उद्यम, अल्लाह के लिये सहा गया मानसिक व शारीरिक कष्ट सत्य की घोषणा करने में पहनाई गई बेड़ियाँ और हथकडियाँ, संक्षेप में कहें तो जीवन और धन का हर बलिदान, धर्म की दिशा में जबान और कलम से की गई प्रत्येक सेवा जो सत्य व न्याय के पक्ष में की गई है, वास्तव में ईश्वर के पक्ष में किया गया जेहाद है और यही जेहाद का वास्तविक सार है। यही कारण है कि जेहाद इस्लाम का अनिवार्य सोच व कर्म है और इस्लाम एवं एक ईश्वर में आस्थावान मुस्लिम 'के लिये इसमें शरीक होना अनिवार्य है।" [४]

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 10, Issue 1, October 2021
Impact Factor: 5.731

मानव समाज के इतिहास में धार्मिक विशुद्धता के दंभ ने कितनी क्रूरतायें की हैं, यह किसी से छिपा नहीं है। इसलिये जरूरी है कि रक्त-वंशगत शुद्धता और धार्मिक विशुद्धता के खोखले विश्वास से बचा जाये और खुले मन से यह स्वीकारा जाये कि सर्वोच्चता मानुष-सत्य को मिलनी चाहिये न कि मानव-विरोधी जड़-सिद्धान्तों को। मौलाना आज़ाद इसी मानुष सत्य के हिमायती थे। संस्कृति विषयक विमर्श में आज़ाद साझी संस्कृति की उपयोगिता स्वीकार करते थे। इस संदर्भ में उन्होंने जो बातें कीं वे गौरतलब हैं -

"ग्यारह सौ वर्षों के साझे इतिहास में हमने साझी उपलब्धियाँ हासिल करके भारत को समृद्ध बनाया है। हमारी भाषाओं, हमारी कविताओं, हमारे साहित्य, हमारी संस्कृति, हमारी कला, हमारी पोशाक, हमारे तौर तरीकों तथा रीति रिवाजों, हमारे दैनिक जीवन की अनेक घटनाओं पर हमारे संयुक्त प्रयास की छाप पड़ी हुई है। वास्तव में जीवन का कोई ऐसा पहलू शेष नहीं है, जिस पर यह छाप न पड़ी हो। हमारी भाषायें भिन्न थीं, हमारे तौर-तरीके तथा रीति-रिवाज असमान थे परन्तु उन्होंने एक दूसरे पर क्रिया-प्रतिक्रिया की और इस प्रकार एक नये सामन्जस्य का जन्म हुआ।"

भारत के इतिहास को पूर्वाग्रह मुक्त होकर देखा जाये, तो आजाद की संस्कृति विषयक समझ में शक की गुंजाइश नहीं रह जाती। सचमुच भारतीय संस्कृति का कोई ऐसा पहलू नहीं है जहाँ संयुक्त प्रयास की झलक न मिलती हो। भारतीय ज्योतिष के महत्वपूर्ण विभाग हैं होराशास्त्र, ताजिकशास्त्र और रमलशास्त्र। 'होरा विद्या' यवनाचार्यों (ग्रीकों) से भारतीयों को मिली थी। "ताजिक अरबी लोगों को कहते हैं। इससे आप समझ सकते हैं कि यह शास्त्र मुसलमानों से हिन्दुओं को मिला। ताजिक के सभी परिभाषिक शब्द अरबी से लिये गये हैं।" [६] मुसलमान ज्योतिषियों से ही रमल शास्त्र मिला।

इतिहासकार अमीर खुसरो गैर मुसलमानों के दमन पर भले ही खुश हो लेते हों लेकिन जहाँ वे सारी कृत्रिमताओं को परे रखकर सिर्फ मनुष्य के रूप में हमारे सामने आते हैं वहाँ हम उन्हें अपने हिन्दुस्तानी होने पर गर्व करता पाते हैं। मुकरियों और पहेलियों की रचना करते समय अमीर खुसरो भारतीय जनता के सबसे निकट होते हैं। 'पद्मावत' की रचना करने वाले मलिक मुहम्मद जायसी, 'ज्ञानदीप' के रचयिता शेखनबी, 'हंसजवाहिर' के कासिमशाह, 'चित्रावली' के उस्मान एवं कृष्ण परक पदों की रचना करने वाले 'रसखान' को कौन ऐसा हिन्दुस्तानी होगा, जो पराया कहेगा। मीर, सैदा, गालिब को खानों में बाँटकर नहीं समझा जा सकता।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

हिन्दू-मुस्लिम एकता आज़ाद के लिये महत्वपूर्ण मुद्दा था। इस मुद्दे पर कोई भी समझौता उनके लिये असंभव था। वे आजादी की प्राप्ति और हिन्दू-मुस्लिम एकता में, प्राथमिकता बाद वाले को देते थे। यहाँ तक कि दोनों में से एक के चयन का प्रश्न आने पर स्वाधीनता का सवाल टाला जा सकता था। आज़ाद ने सच्चे मन से कुबूल किया "यदि कोई फरिश्ता स्वर्ग से नीचे आकर कुतुब मीनार से यह घोषणा करे : हिन्दू मुस्लिम एकता को छोड़ दो और चौबीस घंटों में स्वराज्य आपका हो जायेगा, तो मैं स्वराज्य को स्वीकार करने से मना कर दूँगा परन्तु अपने निश्चय से एक इन्च भी न हटूँगा। स्वराज्य को अस्वीकार करने से केवल भारत ही प्रभावित होगा जबकि हमारी एकता प्रभावित होने से सम्पूर्ण मानव समाज की क्षति होगी।"[७]

यहाँ पर याद आते हैं अहिंसा के अनन्य पुजारी महात्मा गाँधी। गाँधी जी के लिये भी वरेण्य हिन्दू-मुस्लिम एकता ही थी। घृणा और दमन के बजाये प्रेम से जीतने का जो अनोखा तरीका गाँधी जी ने ईजाद किया था, वह मौलाना आजाद की चिन्तन और कार्यशैली में पूरी तरह से ज़ज्ब था। मौलाना आज़ाद ने एक बार कहा था - "यदि तुम ईश्वर को चाहते हो तो बुराई को दूर करो और यदि तुम ईश्वर को प्रसन्न करना चाहते हो तो तुम्हें शैतान के अप्रसन्न होने से नहीं डरना चाहिये।" [८] बुराई दूर करने से, मौलाना आजाद का तात्पर्य, भारत की प्राचीन, मिश्रित संस्कृति की विरासत व धर्म सहिष्णुता को देखते हुये आज के भारत को भविष्य में एक समृद्ध, आधुनिक एवं विकसित राष्ट्र बनाने से था। मौलाना आजाद एवं महात्मा गाँधी का सम्बन्ध वैचारिक समानता के आधार पर बना था इसलिये हम इसको टूटता नहीं देखते। यह एक महान संगम था जिसमें 'गीता' की गहराई थी तो 'कुरान' का बल और ओजस्विता।

सभी धर्मों में प्रेम प्रमुख तत्व होता है। इसको आज़ाद ने अपने जीवन में बखूबी व्यवस्थापित किया। आज़ाद का नारा 'एक राष्ट्र संस्कृति था। जब एक राष्ट्र और साझी विरासत की बात चल रही है तो इसी प्रसंग में एक शंका का समाधान कर लेना उचित होगा। मौलाना आज़ाद ने सन् १९२२ में अदालत के समक्ष बयान देते हुये 'इस्लाम की सम्प्रभुता' पद का प्रयोग किया था लेकिन तत्काल उन्होंने अपनी टिप्पणी के द्वारा इस पद का अर्थ स्पष्ट कर दिया। उनके अनुसार 'इस्लाम' शब्द का आशय सत्य को स्वीकार करना और उसके अनुसार कार्य करना है। 'कुरान' कहता है कि धर्म का सारतत्व सभी जगह समान है और वह है -ईश्वर द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण। सच्चाई का यह मार्ग केवल मनुष्य जाति तक सीमित नहीं है अपितु इसकी व्यापकता सम्पूर्ण सृष्टि तक है।"

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 10, Issue 1, October 2021
Impact Factor: 5.731

हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में मौलाना आज़ाद का मत था कि भारत का कोई भी सांस्कृतिक इतिहास तब तक अधूरा है जब तक कि सिर्फ हिन्दू धर्म को ही शामिल करता हो, दूसरे धर्मों और सम्प्रदायों को नज़रअन्दाज कर जाता हो। मौलाना आज़ाद ने कहा "भारत के सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन अपूर्ण रहेगा अगर 'बौद्ध' और 'जैन' साहित्य उसमें सम्मिलित नहीं किये जाते। बौद्ध काल हमारे देश के सांस्कृतिक विकास में वैभवशाली समय था। 'जैन' दर्शन की पहुँच जीवन की समस्याओं में बहुत गहरे तक है। ये ज्ञान की हमारी अमूल्य विरासतें हैं। हमें इनका संरक्षण उतनी ही सावधानी से करना चाहिये जितनी सावधानी हम वैदिक दर्शन और साहित्य के संरक्षण में दिखाते हैं।" १०

मौलाना आज़ाद बहुत गहरे अर्थों में धार्मिक व्यक्ति थे, लेकिन मौलाना की धार्मिकता दूसरे और लोगों की धार्मिकता से अलग किस्म की थी। वे आँख बन्द कर धर्म को मानने वाले व्यक्ति नहीं थे। उनका सहजबोध और मानवीय विवेक हर पल सजग था। मानव जीवन के सार्वभौम मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में ही वे चीजों को देखते समझते थे। उनकी आलोचनात्मक दृष्टि परम्परा और आधुनिकता दोनों के मूल्यांकन में समान रूप से प्रभावी थी। इन दोनों में से ग्रहण और त्याग के प्रश्न पर वे मानव हित को सर्वोच्चता देते थे। वे धर्म का लक्ष्य लोक-कल्याण मानते थे। वस्तुतः धर्म का लोकोत्तर उत्थान चाहे जितना हो किन्तु अन्ततोगत्वा उसका लक्ष्य लोक-कल्याण ही है। वह लोक धर्म और सामान्य धर्म से बहुत दूर जाकर भी पुनः अधिक दृढ़ और सबल होकर लोक सेवा के क्षेत्र में उतरता है और मानवता की सर्वमुक्ति का प्रयत्न करता है। मानवता के दुःख को दूर करता है और प्रत्येक मनुष्य को एक ऐसा सुख देता है, जो अलौकिक और लोकोत्तर होता है। मौलाना आज़ाद को धर्म, बल और प्रेरणा देता था न कि उन्हें निराशावादी बनाता था। इन्होंने अपने ऐतिहासिक बयान 'क्रौल-फेसल' में बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहा था- "इतिहास लिखने वाले हमारे इंतजार में हैं और भविष्य कब से हमारी तरफ तक रहा है। हमें जल्द से जल्द यहाँ आने दो और भी जल्द-से-जल्द फैसला लिखते रहो। अभी कुछ दिनों तक यह काम जारी रहेगा। यहाँ तक कि एक दूसरी अदालत का दरवाजा खुल जाये। यह खुदा के कानून की अदालत है। वक्त ही इसका जज है, वही फैसला लिखेगा और उसी का फैसला आखिरी होगा। वल्हम्दो लिल्लाहे अव्वलन व आखिरन और सारी तारीफ अल्लाह ही के लिये है, शुरू में भी और आखिर में भी)।"११

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

मौलाना आज़ाद ने 'कुरान' का तर्जुमा किया है लेकिन यह 'कुरान' का अनुवाद भर नहीं है। इसमें उन्होंने इस्लाम की आधारभूत मान्यताओं की बड़ी ही संगत व्याख्या प्रस्तुत की है। इस्लाम को व्यापकतर परिप्रेक्ष्य में रखकर देखा समझा गया है। मौलाना आजाद ने 'कुरान' का तर्जुमा तीन दृष्टियों से किया है -

१. 'कुरान' का अनुवाद सामान्य व्यक्तियों एवं सामान्य मनोभावों को ध्यान में रखकर।

२. अनुवाद पर छोटी-छोटी टिप्पणी, जो कुरान को समझने में मदद देगी।

३. आधारभूत मान्यताओं की व्याख्या, जो विद्वत जनों के लिये उपयोगी होगी।

धर्म सम्बन्धी आज़ाद का परिपक्व चिन्तन 'तर्जुमानुल कुरान' में परिलक्षित होता है जिसका पहला भाग सितम्बर १९३१ में प्रकाशित हुआ था। इसका दूसरा भाग १९३५ या ३६ के आरम्भ में सामने आया। इसका विभाजन इस तरह किया गया-

- पहले भाग में 'सूरा-ए-फातिहा' और 'सूरा-ए-बक्र' से लेकर 'सूरा-उल-इनाम' तक की व्याख्या

- दूसरे भाग में 'अल-ऐराफ' से लेकर 'अल-मोमिनून' तक की व्याख्या

- तीसरे भाग का काम शुरू हो गया था और सूरानूर की किताबत हो गयी थी फिर हालात ने साथ नहीं दिया और यह काम अधूरा ही था कि मौलाना का सन् १९५८ में निधन हो गया।[१२]

'तर्जुमान' के आरम्भ में मौलाना ने ईश्वर के प्रति विश्वासों का ऐतिहासिक विकास दर्शाया है। इस दरम्यान वे ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने वाले किन्ही दार्शनिक अथवा वैज्ञानिक माथापच्ची से दूर रहे। आजाद ने 'तर्जुमा-अल-कुरान' के सार्वभौमिक सत्य व सन्देश को रेखांकित किया। उनका मानना था कि मानव समाज को न केवल ईश्वरीय गुणों को आत्मसात् करना चाहिए वरन् इनका व्यवहार अपने जीवन में भी करना चाहिए। मौलाना आज़ाद स्वयं जन्मतः सत्यग्राही थे। उन्होंने लिखा है मैंने कभी भी सत्य की खोज से अपने आपको विलग नहीं किया।"[१३]

यह दृष्टि एक महान मानवतावादी की ही हो सकती थी। उन्होंने बल दिया कि इस्लाम 'वहदत-ए-अदयान' (धार्मिक एकता) का प्रतीक है। मौलाना ने यह कभी नहीं कहा कि सत्य केवल इस्लाम में मौजूद है बल्कि उन्होने लिखा है -

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

'अपने लम्बे जीवन में अपनी सम्पूर्ण योग्यताओं के साथ मैंने जहाँ तक 'कुरान' की सत्यता को सोचा है, वह मुझे इन पंक्तियों में दिखाई पड़ती है: यह कल्पना का कोई अध्याय नहीं, बल्कि पूर्ववर्ती धर्मग्रन्थों के प्रति विश्वासों का दृढ़ीकरण है और उन सभी चीज़ों की व्याख्या तथा निर्देश भी, और दयालुता का भाव है, जो उसमें विश्वास करते हैं।' [१४]

मौलाना आज़ाद ने यह भी नहीं कहा कि जन्म से मुस्लिम होने के कारण कोई व्यक्ति अपने आप दूसरों से श्रेष्ठ हो जाता है। आजाद ने अपने अध्ययन में यह दिखाया कि पैगम्बर का विश्वास बहुधार्मिकता वाले राज्य 'उम्मत-ए-वाहिदा' (संघीय धार्मिकता) में था जिसमें सहिष्णुता और सद्भावना का बोलबाला हो।'[१५] किसी कवि की ये पंक्तियां आजाद को बहुत प्रिय थीं। ये आजाद के संवेदनशील सोच को व्यक्त करती हैं -

'दैट वेरी पेज वाज ब्लैकेन्ड

व्हेअर आन हैड बीन नोटेड व्हाट वाज डिजायर्ड।'

(बहुत पृष्ठ लिखे गये, यह कहाँ उल्लखित है कि मानव की इच्छाएँ क्या थी)

"मौलाना आजाद ने हिन्दू धर्म पर भी विचार किया है। वे हिन्दू धर्म के बहुदेववाद व मूर्तिपूजा को नकारते हैं। उपनिषदों में 'नेऽति-नेऽति' कहकर ईश्वर की जो निषेधात्मक व्याख्या की गई है, मौलाना के अनुसार यह भले ही दार्शनिक चिन्तन को बढ़ाती हो लेकिन ईश्वर में किसी भी सकारात्मक विश्वास की सम्भावना को समाप्त कर देती है। मौलाना इस बात पर अफसोस जाहिर करते हैं कि समझदार व बुद्धिमान हिन्दू विचारकों ने भी सत्य को समझने के बावजूद मूर्तिपूजा व बहुदेववाद का विरोध न करके, इस पर चुणी, साध रखी है।"[१६]

इससे यह तात्पर्य नहीं निकालना चाहिए कि मौलाना आज़ाद हिन्दू धर्म के विरोधी थे या वे इस्लाम की श्रेष्ठता प्रतिपादित कर, उसे स्वीकार करने का आग्रह करते थे बल्कि, उन्होंने अपने 'तर्जुमान' में लिखा है -

" 'कुरान' दूसरे धर्म के अनुयायियों का इस्लाम ग्रहण करने का नहीं बल्कि उन्हे अपने धर्म के वास्तविक रूप को अपनाने का आवाहन करता है। 'कुरान' कहता है कि जब इन धर्मों के अनुयायी इस बात को स्वीकार करते हैं कि एक ईश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की है तो वे उस एक नियम, एक सत्य को क्यों-कर नकारते हैं ? जो

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

सम्पूर्ण मानवता में उजागर हो रहा है। सभी का पिता एक ईश्वर है, सभी एक ईश्वर का नाम लेते हैं और सभी आध्यात्मिक गुरू ईश्वर तक पहुँचाने का एक ही रास्ता दिखलाते हैं.....

.....फिर भी एक समुदाय दूसरे का दुश्मन है, एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से नफरत करता है जबकि सभी का बुनियादी सम्बन्ध, उद्देश्य और रास्ता एक है। दुनिया में तमाम दंगा-फसाद किसके नाम पर ? क्या यह एक ईश्वर के नाम पर नहीं, जिससे सभी धर्म उद्घाटित हैं, जिसने सभी को बनाया है, और भाई चारे की एक भावना में बाँधा है।" १७

ऐसे सवाल हर संवेदनशील व्यक्ति को झकझोरते हैं। ऐसे सवालों से व्यथित आज़ाद का मानना था कि ईश्वरीय गुणों तथा दीन के सार्वभौम स्वरूप को आधार बनाया जाए तो मुस्लिम व गैर मुस्लिम धर्मों के बीच मतभेद को निपटाया जा सकता है।

मौलाना आज़ाद के 'तर्जुमान' पर कट्टर लोगों ने आपत्तियाँ दर्ज की, क्योंकि यह एक व्यावहारिक व्याख्या थी। एक बड़ी आपत्ति यह थी कि वह 'निजात अखरवी' (मोक्ष) के लिए ईमान बिल रिसालत जरूरी नहीं समझते। यह सब कुछ इसलिए हुआ कि उन्होने 'ला तकराबुस सलाता' (तुम नमाज के करीब भी मत जाओ) के साथ 'व अंतुम सुकारा' (जब कि तुम नशे में हो) नजर अंदाज कर दिया था। बाद में मौलाना ने टिप्पणी द्वारा इस स्थिति को स्पष्ट कर दिया था।

मौलाना आज़ाद जितने सच्चे धार्मिक व्यक्ति थे, उतने ही सच्चे राष्ट्रवादी। इस्लाम में अगाध विश्वास राष्ट्रप्रेम के आडे नहीं आता था बल्कि वह मौलाना की राष्ट्रीय भावनाओं को पुष्ट करता था। मौलाना आज़ाद के समकालीनों में से अनेक ऐसे थे और अब भी हैं जो इस्लाम और राष्ट्रीयता का सह अस्तित्व नहीं मानते।

साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के शिकार लोगों की भारतीयता की अवधारणा हिन्दुत्व से परिभाषित होती है। उनकी विचारणा में इस्लाम और भारतीयता में विरोधभाव है। भारतीय होने के लिए राष्ट्रवादी होना जरूरी है और राष्ट्रवादिता हिन्दुपन से ही संभव है। आजाद इस उग्र विचारधारा को राष्ट्र के लिए सबसे बड़ा खतरा मानते थे। उनकी लड़ाई हमेशा इस राष्ट्रविरोधी, दूषित और अप्रामाणिक भारतीयता की अवधारणा के खिलाफ चलती रही। जो महानुभाव इस्लाम और राष्ट्रीयता का सह अस्तित्व नहीं मानते उन्हें याद करना बाहिए २७ मार्च १९४० को रामगढ़ (बिहार) में सम्पन्न हुआ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का तिरपनवाँ अधिवेशन, जिसमें मौलाना आज़ाद ने

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

जोरदार शब्दों में कहा था- "इस्लाम की रूह मुझे इससे नहीं रोकती और राह में रहनुमाई करती है। मैं फख्र के साथ महसूस करता हूँ कि मैं हिन्दुस्तानी हूँ। मैं हिन्दुस्तान की एक अविभाज्य और एकतापूर्ण राष्ट्रीयता का एक अंग हूँ मैं एक ऐसा तत्व हूँ जिसके बिना इसकी महानता की प्रतिमा अधूरी रह जाती है। मैं इसकी बनावट का एक घटक हूँ। मैं अपने इस दावे से कभी उदासीन नहीं रह सकता।"[१८]

ऐसा राष्ट्रप्रेम रखने वाले मौलाना आजाद के जेहन में संस्कृत के इस अमर श्लोक की गूँज थी-'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादऽपि गरीयसी' [१९] (माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है) देशभक्ति मुसलमानों के लिए धार्मिक कर्तव्य है, ऐसा आज़ाद का मानना था। मौलाना आज़ाद के लिए मातृभूमि जन्नत से भी बढ़कर थी, यह एक जड़ धार्मिक व्यक्ति के लिए शायद सम्भव न हो पाता, उसके लिए तो 'जन्नत' एक दूसरा ही लोक होता है।

मौलाना आज़ाद के सन्दर्भ में जब सच्चे धार्मिक और सच्चे राष्ट्रवादी की बात चल रही है तो १९२१ में मजलिस खिलाफत आगरा के भाषण का जिक्र न करना अधूरापन होगा। मौलाना आज़ाद का खिलाफत आन्दोलन में भाग लेना, धर्म के प्रति लगाव व उदार सोच का ही परिणाम था। मौलाना आज़ाद ने खिलाफत भाषण (आगरा) में कहा था- "मेरा अकीदा है कि हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तान के मुसलमान अपने बेहतरीन फर्ज अदा नहीं कर सकते जब तक वे इस्लाम के आदेशों के मुताविक हिन्दुस्तान के हिन्दुओं से पूरी सच्चाई के साथ एकता और इत्तफाक न कर लें।"[२०]

यह विश्वास 'कुरान' पाक की सन्देह से परे आयतों पर आधारित था। इसी एकता के तहत उन्होंने अपनी वह बात भी दोहराई थी जो 'अलहिलाल' के पहले अंक में कही थी 'हिन्दुस्तान के सात करोड़ मुसलमान हिन्दुस्तान के बाईस करोड़ हिन्दू भाईयों के साथ मिलकर ऐसे हो जाऐं कि दोनों मिलकर हिन्दुस्तान की एक कौम और नेशन बन जायें।'[२१]

सच्चा धर्म-बोध सही इतिहास बोध से तय होता है। मौलाना आज़ाद की धर्म विषयक समझ इतिहास के गहरे अध्ययन और लम्बे चिन्तन-मनन से निर्मित हुई थी। भारत के इतिहास में इस्लाम के आगमन के तात्कालिक और दूरगामी प्रभावों को बहुत बार जानबूझकर और कई बार अनजाने में, अधूरी समझ के कारण नकार दिया गया है अथवा इन प्रभावों को विकृत रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है। भारतीय समाज व्यवस्था अनुशासित होती रही है वर्णाश्रम धर्म और जाति व्यवस्था से। इस व्यवस्था में हाशिए पर फेंक दी गई जातियाँ चाहकर भी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

व्यवस्थागत बदलाव लाने में असमर्थ थी। 'भारतीय संस्कृति में इस्लाम का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने दलित-जाति समूहों के सामने शोषण और आत्म-गौरव विलोपन से मुक्ति पाने की एक सम्भावना प्रस्तुत की। इस्लाम ने भारतीय जनमानस में सदियों से घुमड़ रही वैचेनी को ठोस रूप देने का क्रांतिकारी काम किया। समतावादी होने के साथ-साथ इस्लाम राजसत्ता का धर्ममत भी था। इस कारण कम से कम, सिद्धांतों में इस्लाम के अनुयायियों को लौकिक-परलौकिक, दोनो तरह की सुरक्षा हासिल थी..... इस्लाम के पहले जाति-व्यवस्था की सिर्फ आलोचना की जा सकती थी, जाति के वैचारिक औचित्य प्रतिपादन का मजाक उड़ाया जा सकता था, अधिक से अधिक बैरागी बना जा सकता था। लेकिन इस्लाम के बाद एक सामाजिक-धार्मिक व्यवस्था को छोड़कर दूसरी को चुना जा सकता था।" [२२]

इसलिए भारत के निर्माण में इस्लाम के योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस्लाम के योगदान को नकारकर गढ़ी गई भारतीयता की अवधारणा को अप्रामाणिक कहना एक भावात्मक जरूरत नहीं है। यह तथ्यात्मक रूप से सही है। इस्लाम की भूमिका का विवेचन करते हुए मौलाना आज़ाद ने कहा- "हम अपने साथ अपना खजाना लाए। हिन्दोस्तान भी अपनी बहुमूल्य परम्परा की समृद्धि से आपूरित था हमने उसको वह बहुमूल्य उपहार प्रदान किया जिसकी उसे इस्लाम के खजाने से सबसे अधिक जरूरत थी मनुष्य मात्र की समानता का संदेश। पूरी ग्यारह शताब्दियाँ तब से गुजर चुकी हैं, इस्लाम का अब हिन्दोस्तान की जमीन पर उतना ही महान दावा है जितना हिन्दू धर्म का।" [२३]

उन्नीसवीं सदी से बौद्धिकों का एक वर्ग ऐसा उभरा जो अपने वर्तमान की तेज रोशनी से धुंधियाकर अतीत में सुरक्षाकवच खोज रहा था। मनमाने ढंग से गढ़े गए अतीत को स्वर्ण युग जैसा मोहक नाम देकर ऐसे बौद्धिक उस युग को धरती पर उतार लाने का राग अलाप रहे थे। जो सामाजिक संस्थाएँ अपनी उपयोगिता काल के प्रवाह में खोकर खुद विलुप्त हो गई थी अब उन्हें पुनर्जीवन देने का निष्फल प्रयत्न किया जा रहा था। पुनरूत्थानवाद की ललकहीनता ग्रन्थि से उबर न पाने के कारण पैदा हुई थी। सत्ता पर पर काबिज अंग्रेजों की सभ्यता, हिन्दू और मुस्लिम सभ्यता से आगे बढ़ी हुई आधुनिक और विकसित सभ्यता थी। अंग्रेजों की सांस्कृतिक रणनीति भी यही थी कि हिन्दू व मुस्लिम दोनों ही अपने को सांस्कृतिक रूप से गया-गुजरा समझे और शासक वर्ग की श्रेष्ठता को स्वीकार करें। जिनके पास अंग्रेजों की इस साजिश से जूझने का साहस न था वे पुनरुत्थानवाद का सहारा ले रहे थे। मौलाना आज़ाद ने इस कोशिश को एक ऐसा स्वप्न करार दिया जिसे साकार कर पाना नामुमकिन

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

है 'यदि हमारे बीच कोई ऐसे हिन्दू मौजूद हैं जो हजारों या उससे ज्यादा पहले के हिन्दू जीवन को वापस लाना चाहते हैं, तो यह उनका स्वप्न ही है और ऐसे स्वप्न व्यर्थ की कल्पनाएँ ही होती हैं। इसी प्रकार यदि कुछ मुसलमान लोग ऐसे हैं जो अपनी पिछली उस सभ्यता और संस्कृति को पुनर्जीवित करना चाहते हैं, जिसे वे हजारों वर्ष पहले ईरान तथा मध्य एशिया से लाए थे, तो वह उनके स्वप्न ही हैं जिसे वे जितनी जल्दी समझ जाएंगे, अच्छा होगा। यह अस्वाभाविक कल्पनाएँ हैं, जो कि यथार्थ जीवन में नहीं पनप सकती, मैं उन लोगों में से हैं, जिनका यह विश्वास है कि धर्म में पुनरुत्थान एक आवश्यकता हो सकती है परन्तु सामाजिक मामलों में पुनरुत्थान प्रगति में बाधक है।" [२४]

धर्म को दो रूपों में देखा जा सकता है। एक, मानवीय सार के रूप में तथा दूसरा, इतिहास बद्ध सामाजिक व्यवस्था के रूप में। मौलाना आज़ाद मानवीय सार के रूप में धर्म की सत्ता के पुनरुत्थान को आवश्यक ठहराते हैं। इतिहास बद्ध सामाजिक व्यवस्था के रूप में धर्म का पुनरुत्थान प्रगति की भावी संभावनाओं को अवरुद्ध करता ही है, विकास की वर्तमान स्थिति को भी पीछे ढकेलता है। मौलाना आज़ाद परिवर्तन के हिमायती थे। वे चाहते थे कि कोई भी समुदाय जड़ता का शिकार न हो। बदलते समय के अनुसार सामाजिक संस्थाओं और सांस्कृतिक गतिविधियों में परिवर्तन होना जरूरी है। 'जामा मस्जिद' से भाषण देते हुये उन्होंने कहा था, "भाइयों। परिवर्तनों के साथ कदम मिलाकर चलिये। मत कहिये कि हम बदलाव के लिये तैयार नहीं हैं। हमेशा तत्पर रहिये।"

मौलाना आज़ाद का चिन्तन सिर्फ एक देश को ध्यान में रखकर नहीं किया गया था। वे सारतः अन्तर्राष्ट्रीयतावादी थे। उनका अन्तर्राष्ट्रीयतावाद तो इस्लामाबाद था न ही श्रमिकों की विश्वव्यापी एकता। आजाद के अन्तर्राष्ट्रीयतावाद का आधार मनुष्य और उसका चिन्तन है।' [२५] मनुष्य ने सम्पूर्ण संसार में तर्क और चिन्तन का एक जैसा तरीका अपनाया है। मानवीय तर्क एक है और अभिन्न है। मानवीय भावनाएं व्यापक रूप से समान है।' [२६]

मौलाना आज़ाद ने स्त्री-पुरुष की सामाजिक स्थिति के बारे में भी विचार किया है। इस सम्बन्ध में कुरान की धारणा को स्पष्ट करते हुये उन्होंने लिखा 'कुरान, स्त्रियों के कुछ अधिकारों के विश्वास को न केवल शामिल करता है बल्कि बहुत स्पष्ट रूप में घोषणा करता है कि पुरुष और स्त्री 'अधिकार' के स्तर पर बराबर हैं। जिस तरह का अधिकार पुरुष, नारी के सम्बन्ध में रखता है, उसी प्रकार स्त्री, पुरुष के सम्बन्ध में ..... पुरुष लोग

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

जब कि स्त्री के सम्बन्ध में एक विशिष्ट अधिकार रखते हैं, वह अधिकार स्त्री की देखभाल का है। पारिवारिक व्यवस्था के सन्दर्भ में पुरुष प्रशासक है। यह भेद प्रत्यक्षतः कोई अन्तर्निहित वरिष्ठता नहीं प्रदान करता। यह केवल पारिवारिक जीवन की एक पद्धति है जो कि उसकी स्थिति को निश्चित करती है। इन स्पष्टीकरणों से इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जैसा कि स्त्री-पुरुष की स्थिति और सम्बद्ध अधिकारों की बात है, 'कुरान' मानता है कि दोनों बराबर है लेकिन सामाजिक व्यवस्था पुरुष को आजीविका का प्रवन्ध करने के लिये जिम्मेदार बनाती है।"२७

किसी भी विद्वान को धर्म एवं समाज पर विचार करने के क्रम में शिक्षा पर विचार करना पड़ता है एवं शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन करने के क्रम में धार्मिक शिक्षा के सवाल से टकराना होता है। भारत में तो धार्मिक शिक्षा को नजर अंदाज कर पाना संभव ही नहीं है। धार्मिक शिक्षा के प्रश्न पर मौलाना आज़ाद का विचार था कि इसे स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्थान मिलना चाहिये। वैसे तो एक धर्म निरपेक्ष लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था में शिक्षा का स्वरूप भी धर्म निरपेक्ष होना चाहिये लेकिन धर्म प्राण भारतीयों को ऐसी शिक्षा स्वीकार होगी, इसमें सन्देह है। पूर्णतः धर्म निरपेक्ष शिक्षा लोगों को विवश करेगी कि वे अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा के लिये निजी संस्थाओं में भेजें। अब तक के अनुभव बताते हैं कि धार्मिक शिक्षा देने वाली निजी संस्थाएँ प्रायः संकीर्ण धार्मिकता और धार्मिक उन्माद फैलाती रही हैं। "इसलिये अगर इस स्थिति से बचना है तो समाधान प्राथमिक स्तर पर धार्मिक शिक्षा को खारिज करने में नहीं बल्कि स्वस्थ और धार्मिक शिक्षा देने में निहित है। यह हमारे प्रत्यक्ष देख-रेख में होना चाहिये।" २८

मौलाना आज़ाद ने धर्म की महत्ता समझते हुये जो व्याख्याएँ कीं, धर्म के सम्बन्ध में विचारणा के दौरान जो विस्तृत फलक रखा एवं लोकतांत्रिक दृष्टि अपनायी, वह उनकी उदार दृष्टि और गहरी अन्तर्दृष्टि का प्रमाण है। भारतीय समाज के लोकतांत्रिक पुनर्गठन में रूचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति मौलाना आज़ाद के प्रति कृतज्ञ हुये बिना नहीं रह सकता। आज़ाद के सारे संघर्षों के बाद हम उनके जीवन में अंततः यही सच्चाई उभरती देखते हैं, जैसा कि 'रोमाँ-रोलाँ' ने स्वामी विवेकानन्द के बारे में कहा है २९ वह हम मौलाना आज़ाद के बारे में भी सच पाते हैं- कि "मौलाना आज़ाद जैसा व्यक्तित्व बार-बार इस नर्क में लौटने को बाध्य है। यह उसकी नियति जीने का एकमात्र तर्क ही है बार-बार जन्म लेना, इस नर्क की ज्वाला से संघर्ष करना, उससे झुलसते जनों में प्राण फूंकना, उन्हें बचाने के लिये स्वयं अपनी आहुति दे देना ही उसका घर्म है। 'धर्म' की इस समझ के कोण से देखें तो आज़ाद वहाँ नहीं हैं जहाँ खोखले, आक्रामक तर्कजाल में धर्म और राष्ट्र का खोटा सिक्का ढाला जा रहा है। बल्कि वे

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

वहाँ हैं जहाँ उनकी कल्पना के राष्ट्र की संभावनाएँ टटोली जा रही हैं। मौलाना आजाद उन लोगों के साथ कैसे हो सकते हैं, जो इस नर्क की ज्वाला में और ईंधन डाल रहे हैं ? कैसे हो सकते हैं वे उनके साथ, जो करोड़ों वंचितों को आपस में लड़ाकर धर्म और देशभक्ति का नाम लेने का दुस्साहस करते हैं ? हमारे माहौल में दासता के स्रोत क्या हैं ? उसके नए-नए रूप कौन से हैं ? मुक्ति की संघर्ष यात्रा किस रास्ते चलेगी ? ऐसे सवालों से टकराने वाले लोग सच्चे धर्मपरायण, देशभक्त और कर्मयोगी हैं। ऐसे लोग मौलाना आज़ाद के प्रतिमापूजक हों या न हों, उनके विचार क्रम में हमराही अवश्य हैं।

आज जब कि मौलाना आज़ाद हमारे बीच नही हैं उनके विचारों एवं कृत्यों को व्यापक फलक प्रदान करना एवं उसको अपने व्यवहार में लाना उनके प्रति, उससे ज्यादा उनके कर्म के प्रति सच्ची कृतज्ञता होगी।

आज के माहौल में श्रीकान्त वर्मा की इस कविता पर सोचने की जरूरत है यह हमारे लिये रोशनी की एक झलक छोड़ती है-

उन्हें मदिरा, प्रमाद और आलस्य ने

इस

लायक नहीं

रखा

कि उन्हें हम अपना शासक कह सकें

तब हम क्या करें ?

शासक नहीं होंगे

तो कानून नहीं होगा

कानून नहीं होगा

तो व्यवस्था नहीं होगी

व्यवस्था नहीं होगी

तो धर्म नहीं होगा

धर्म नहीं होगा

तो समाज नहीं होगा

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 10, Issue 1, October 2021
Impact Factor: 5.731

समाज नहीं होगा

तो व्यक्ति नहीं होगा

व्यक्ति नहीं होगा

तो हम नहीं होंगे

हम क्या करें ?

कानून को तोड़ दें ?

धर्म को छोड़ दें ?

व्यवस्था को भंग करें ?

****

सत्य के लिये मर मिटने की आन नहीं छोड़ें

अन्त में

प्राण तो

सभी छोड़ते हैं

व्यर्थ के लिए

हम

प्राण नही छोड़ें' [३०]

.....श्री कान्त वर्मा

सन्दर्भ

१. संगम लाल पाण्डेय, "समाज, धर्म और राजनीति" पृ. १२८ प्रकाशन दशपीठ, इलाहाबाद, १९८१

२. 'गुबारे खातिर' अबुल कलाम आज़ाद, (संपादक : मालिक राम) पृ. ३८ साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, पहला संस्करण १९६७

३. 'हमारी आजादी' अबुल कलाम आज़ाद, (अनुवादक : मोहम्मद मुजीब) पृ. १३ पर उद्धत, ओरियंट लौंगमैन, तीसरा संस्करण, १९७६)

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 10, Issue 1, October 2021 Impact Factor: 5.731

४. सैयदा सैयदैन हमीद द्वारा सम्पादित, 'इंडियाज मौलाना अबुल कलाम आज़ाद' वाल्यूम १ भारतीय संस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, पृ. ९६

५. आजाद, इस्लाम एण्ड नेशनलिज्म में उद्धत, पृ. ३९ मौलाना आजाद मेमोरियल कमेटी, नई दिल्ली, १९७५.

६. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली, भाग ६, पृ. १४३ राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १६८१

७. "सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ मौलाना अबुल कलाम आज़ाद" वाल्यूम I, पृ. १ मुख्य संपादक डॉ. रवीन्द्र कुमार, अटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, १९९१

८. सैयदा सैयदैन हमीद द्वारा सम्पादित, 'इंडियाज मौलाना : अबुल कलाम आज़ाद' वाल्यूम II, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद, पृ.- सन्देश VIII

९. महादेव देसाई, "मौलाना अबुल कलाम आज़ाद" पृ. ७७ शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं. लिमिटेड, आगरा १९४६

१०. 'सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ मौलाना अबुल कलाम आज़ाद', वाल्यूम ६, पृ. - ८३

११. अब्दुल कवी दस्नवी 'अबुल कलाम आजाद' (अनुवादक- जानकी प्रसाद शर्मा) पृ.- ९०-९१ साहित्य अकादमी, नई दिल्ली १९९५

१२. ..... वही .....पृ. ९७

१३ सैयदा सैयदैन हमीद द्वारा सम्पादित, 'इंडियाज मौलाना : अबुल कलाम आजाद वाल्यूम २, भारतीय सांस्कृतिक परिषद, पृ. ८७

१४. .....वही ८७

१५. वी. एन. दत्ता, "मौलाना आज़ाद" पृ. १९४ मनोहर पब्लिकेशन, नई दिल्ली, ११९०

१६. 'इंडियाज मौलाना : अबुल कलाम आज़ाद' वाल्यूम I पृ. ९९ से उद्धत

१७. .....वही ..... पृ. १००

१८. 'खुत्याते आजाद अबुल कलाम आज़ाद' (संपादक मालिक राम) पृ. २९७-२९८ साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, पहला संस्करण १९७४

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 10, Issue 1, October 2021
Impact Factor: 5.731

१९. 'इंडियाज मौलाना अबुल कलाम आज़ाद' वाल्यूम II पृ. VIII

२०. 'खुत्याते आजाद : अबुल कलाम आज़ाद', (संपादक मालिक राम) पृ. ४७

२१. .....वहीं ..... पृ. ५१

२२. डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल- संस्कृति वर्चस्व और प्रतिरोध' पृ. २९-३० राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९५

२३. डॉ. पी. एन. चोपड़ा द्वारा उद्धत, 'मौलाना अबुल कलाम आज़ाद : अनफुलफिल्ड ड्रीम्स' इंटर प्रिंट, नई दिल्ली, १९९०, पृ. २८

२४. सुभाष कश्यप द्वारा सम्पादित, 'अबुल कलाम आज़ाद' पृ. ११ नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, १९८९

२५. आजाद, इस्लाम एंड नेशनलिज्म, पृ. २९

२६. 'सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ मौलाना अबुल कलाम आज़ाद' वाल्यूम I, पृ. १९४

२७. 'इंडियाज मौलाना अबुल कलाम आज़ाद' वाल्यूम 1, पृ. ९३

२८. "स्पीचेज ऑफ मौलाना आज़ाद", १९४७-१९५८ पब्लिकेशन डिवीजन, पृ. २५

२९. 'रोमाँ-रोला 'विवेकानन्द' पृ. १०५ लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, १९९३

३०. 'श्री कान्त वर्मा' 'प्रतिनिधि कविताएँ' सम्पादक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृ. १२७ राजकमल पैपरबैक्स में प्रकाशित, १९९२